Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 3, Issue 2 - 2018

नवीन तथ्यों को जानने की इच्छा और समाचार पत्र- एक अध्ययन

अमरेन्द्र कुमार आर्य*

प्रस्तावना

परमात्मा की सबसे सुन्दर कृति मानव को कहा गया है। मानव को ईश्वर ने हर गुण और क्षमता से सम्पन्न किया है। कुछ इन गुण और क्षमताओं को जान जाते हैं और कुछ अनभिज्ञ होते हैं। किसी में कम होते है किसी में ज्यादा होते हैं परन्तु सक्षम सभी होते हैं। कुछ जीव विज्ञानी मानव को श्रेष्ठ जानवर की संज्ञा भी देते हैं। प्राणी शास्त्री डेसमौंड मौरिस ने कहा है कि संसार में बंदर और वानरों के 193 प्रजाती हैं,192 बालों से ढके हुए हैं और एक नग्न वानर हैं जिन्हें होमो सेपियंस या मानव कहा गया है। डेसमौंड मौरिस मानव को सबसे सफल प्रजाति मानते हैं। लेकिन डेसमौंड मौरिस के इस विचार को मानव रूपी जानवर ने हर बार गलत साबित किया है। मानव के भीतर जानने की इच्छा ने उसे संसार के हर प्राणी से अलग-थलग किया है। इसी जानने की इच्छा से आज मानव अंतरिक्ष के खोज पर निकला है। मानव की इसी जानने की इच्छा को वैज्ञानिक विभिन्न खोजो का आधार मानते है। इसी क्रम में मानवीय भूख को रेखांकित किया जाए तो मुख्य रूप से यह दो प्रकार की दिखाई देती है। पहली जिस्मानी भूख जो भोजन से दूर होती है और दूसरी मानसिक भूख जिसे ज्ञान अथवा जानकारी से तृप्त किया जा सकता है। जस्मानी भूख स्थुल शरीर को चलाये रखने के लिए आवश्यक है परन्तु मानसिक भूख विकास की सूचक है। जस्मानी भूख की तृप्ति जितनी आवश्यक है उससे कहीं अधिक है मानसिक भूख का पोषण। इस मानसिक भूख का पोषण मानव कई स्रोतों से करता है, जिसमें पत्रकारिता एवं पत्रकारों द्वारा सूचना एवं जानकारी मुहैया करना एक मुख्य जरिया बनकर उभरा है। आधुनिक युग में व्यक्ति जस्मानी भूख से तो तृप्त है परन्तु मानसिक तृप्ति हांसिल करने में अधिक जुटा रहता है। यहीं से जानने की इच्छा का सूत्रपात होता है,जिसको पत्रकारिता ने काफी हद तक पूर्ण किया है। इस शोध पत्र में मानव की समाचार पत्र पढ़ने की रूचि और उसे पढ़ने में लगाये गए समय की जांच की गई है। इसे जानने के लिए राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के 150 लोगों के बीच रायशुमारी की गई है,जिससे आम पाठकों में समाचार पत्र पढ़ने की रूचि को समझने की कोशिश की गई है।

उद्देश्य

शोध मुख्य रूप से दो उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए किया गया है,जो कि सच्चाई को हर स्तर पर जांचने का एक प्रयास है। शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नवत हैं-

- समाचार पत्रों की पढनीयता की जांच।
- भाषाई समाचार पत्रों की पढनीयता के आधार पर क्रम को जानना।

*पीएचडी शोधार्थी, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

शोध विधि

उपरोक्त शोध समस्या तथा उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में आम पठाकों के प्रश्ननावली तैयार कर सर्वेक्षण किया गया है। इस क्रम में 150 लोगों से बातचीत की गई है।

- शैड्यूल मैथड के जरिये दिल्ली की विभक्त की गई श्रेणियों में एक-एक कर साक्षात्कार किये गये। कामगार युवाओं तथा पुरूषों से शाम को तथा महिलाओं तथा बुजुर्गों से दोपहर में साक्षात्कार लिये गये। कुछ उत्तरदाताओं ने स्वयं प्रश्नावली को पढ़ कर जवाब लिखे तथा अधिकांश ने केवल जवाब दिया। केवल जवाब देने वाले उत्तरदाताओं का जवाब प्रश्नावली पर वहीं लिखा गया तथा प्रश्नावली पर उनके हस्ताक्षर भी लिये गये।
- दोनों श्रेणियों के प्रश्नों को ध्यान में रखते हुए ग्राफ पेपर पर वैज्ञानिक तरीके से डाटा इकट्ठा किया गया।
- डाटा इकट्ठा करने के बाद दोनों श्रेणियों के प्रश्नों की तालिकायें तैयार की गई।
- तालिकाओं को कम्प्यूटर के माध्यम से एक्सएल-शीट पर तैयार कर उनका ग्राफ तैयार किया गया और उन तालिकाओं तथा ग्राफ का डाटा विश्लेषण किया गया।

सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों का प्रस्तुतिकरण

समाचार पत्र एक दिन पुरानी घटनाओं को दूसरे दिन पाठकों के मध्य समाचार के रूप में पहुंचाते हैं। परन्तु इसके बावजूद भी समाचार पत्रों की पढनीयता बढी है। निम्न प्रस्तुत तालिका आम पाठकों के समाचार पत्रों में रूची और जानने की प्रवृत्ति की परख करती है।

तालिका 1.

क्रम सं.	समाचार पत्र की संख्या	पढ़ने वाले	प्रतिशत	विशेष
1.	केवल एक	91	60.6%	केवल एक ही समाचार पत्र पढ़ने वाले
2.	एक से अधिक	58	38.6%	एक से अधिक समाचार पत्र पढ़ने वाले
3.	कभी-कभी पढ़ने वाले	1	0.6%	समाचार पत्र कभी-कभी पढ़ने वाले
योग =		150	100%	

तालिका 2.

क्रम सं.	समाचार पत्र	पाठक	प्रतिशत	विशेष
1.	केवल हिन्दी	51	34 %	केवल हिन्दी समाचार पत्र पढ़ने वाले
2.	केवल अंग्रेजी	39	26 %	केवल अंग्रेजी समाचार पत्र पढ़ने वाले
3.	केवल मराठी	1	0.6 %	केवल मराठी समाचार पत्र पढ़ने वाले
4.	एक से ज्यादा हिन्दी	26	17.3 %	एक से ज्यादा केवल हिन्दी समाचार पत्र पढ़ने वाले
5.	एक से ज्यादा अंग्रेजी	8	5.3 %	एक से ज्यादा केवल अंग्रेजी अखबार पढ़ने वाले
6.	हिन्दी और अंग्रेजी	24	16 %	हिन्दी और अंग्रेजी समाचार पत्र पढ़ने वाले
7.	अखबार कभी-कभी पढ़ने वाले	1	0.6 %	समाचार पत्र कभी-कभी पढ़ने वाले
योग =		150	100%	

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

ग्राफिक्स 1.

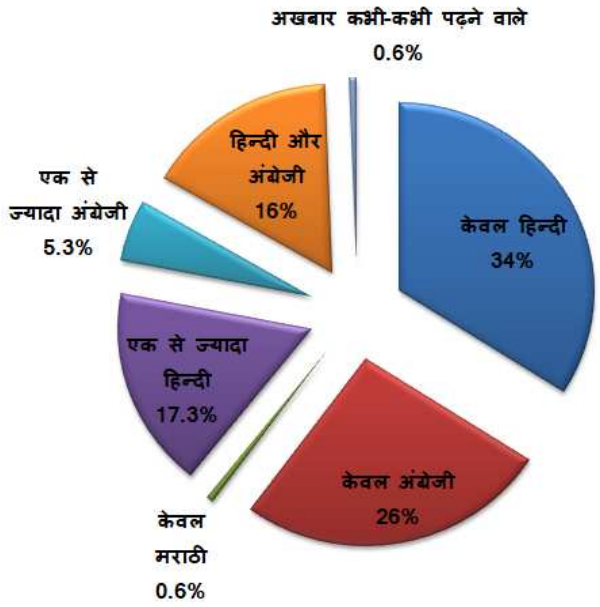

ग्राफिक्स 2.

भारत में जब से 24X7 समाचारीय चैनलों का दौर शुरू हुआ तो समाचार पत्र संस्थान इस उधेड़बुन में थे कि कहीं समाचार पत्रों का पाठक वर्ग टूट कर समाचारीय चैनलों के साथ न जुड़ जाए। हालाकि हुआ भी कुछ ऐसा ही। क्योंकि एक आम व्यक्ति जब चाहे टीवी खोल कर आस-पास घटित होने वाली घटनाओं की सूचना कभी भी देख एवं जान सकता था। समाचार पत्रों में वही ख़बर दूसरे दिन प्रकाशित होती थी जो कि ज्यादातर पाठकों को समाचार चैनलों के माध्यम से पता होती थी। ख़बरिया चैनलों के आगमन ने जहां ख़बर या सूचना के आदान-प्रदान को गति दी वहीं समाचार पत्र के तौर-तरीकों में क्रान्ति का भी बीजारोपण किया। ज्यादातर समाचार पत्रों ने अपने

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

विषयवस्तु और ले-आउट को नया रूप दे दिया और दोनों माध्यमों ने मिल कर सूचना तथा ख़बर के क्षेत्र में क्रान्ति कर दी। तालिका-1 के आंकड़ों को ध्यान पूर्वक देखें तो पता चलता है कि 150 उत्तरदाताओं में मात्र एक उत्तरदाता है, जो समाचार पत्र कभी-कभी पढ़ता है, अन्य 149 उत्तरदाता समाचार पत्रों को नियमित पढ़ते हैं और महत्व देते हैं। प्रतिशत में ये आंकड़ा 99.3 प्रतिशत है जो कि समाचार पत्रों के महत्व एवं उनकी प्रासंगिकता को दर्शाता है, जिससे सिद्ध होता है कि सूचना के इस तीव्र दौर में समाचार पत्रों का खास स्थान है।

विश्लेषण

पाठकों की रूचि,समाचार पत्रों के महत्व तथा प्रासंगिकता को जानने के लिए तालिका बनाई गई है। तालिका-1 के अनुसार 150 उत्तरदाताओं में से 91 उत्तरदाता अर्थात् 60.6 प्रतिशत पाठक केवल एक समाचार पत्र नियमित पढ़ते हैं। 58 उत्तरदाता अर्थात् 38.6 प्रतिशत पाठक एक से अधिक समाचार पत्रों को नियमित पढ़ते हैं। 150 उत्तरदाताओं में मात्र एक उत्तरदाता समाचार एवं सूचना जानने के लिए समाचार पत्र कभी-कभी पढ़ता है। लेकिन 150 उत्तरदाताओं में 149 उत्तरदाताओं का नियमित समाचार पत्र पढ़ना समाचार पत्रों की पठनीयता को दर्शाता है।

ग्राफ-2 अथवा तालिका-2 में पाठकों की रूचि को दर्शाया गया है। अधिकांश उत्तरदाता ऐसे हैं जो केवल हिन्दी समाचार पत्र ही पढ़ते हैं। कुछ मात्र अंग्रेजी। अधिकांश दोनों भाषाओं के समाचार पत्रों को महत्व देते हैं। ग्राफ-2 और तालिका-2 को देखें तो 51 उत्तरदाता अर्थात् 34 प्रतिशत केवल हिन्दी समाचार पत्रों को नियमित पढ़ते हैं। वहीं केवल अंग्रेजी समाचार पत्रों को पढ़ने वाले पाठकों का आंकड़ा 39 अर्थात् 26 प्रतिशत है। मात्र एक उत्तरदाता मराठी समाचार पत्र पढ़ता है। वहीं एक से ज्यादा हिन्दी समाचार पत्रों के पढ़ने की बात की जाए तो 17.3 प्रतिशत अर्थात् 26 पाठक एक से अधिक हिन्दी समाचार पत्रों को नियमित पढ़ते हैं। एक से अधिक अंग्रेजी समाचार पत्रों का आंकड़ा घट कर 5.3 अर्थात् 8 पाठकों पर सीमित हो जाता है। इन आंकड़ों में कुछ ऐसे उत्तरदाता भी हैं जो एक से ज्यादा हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाई समाचार पत्रों को पढ़ते हैं। ये आंकड़ा 150 उत्तरदाताओं में 24 उत्तरदाताओं का है। जिनका प्रतिशत 16 है। अर्थात् पाठकों का एक बड़ा वर्ग हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं के समाचार पत्रों को महत्व देता है और नियमित रूप से पढ़ता है।

सबसे अधिक भाषाई समाचार पत्रों की पठनीयता की बात की जाए तो 150 उत्तरदाताओं में केवल हिन्दी समाचार पत्र पढ़ने वाले 51 और एक से अधिक हिन्दी समाचार पत्र पढ़ने 26 उत्तरदाता हिन्दी भाषा के अखबारों को पढ़ते हैं। दोनों आंकड़ों को जोड़ दिया जाए तो ये आंकड़ा 77 अर्थात् 51.3 प्रतिशत होता है। अर्थात आधे से ज्यादा उत्तरदाता हिन्दी भाषी समाचार पत्रों को नियमित पढ़ने में रूचि रखते हैं। वहीं केवल एक अंग्रेजी समाचार पत्र पढ़ने वाले पाठक 39 और एक से अधिक अंग्रेजी समाचार पत्र पढ़ने वाले 8 पाठक हैं। जिनका जोड़ 47 अर्थात् मात्र 31.3 प्रतिशत पाठक अंग्रेजी भाषाई समाचार पत्रों को नियमित पढ़ते हैं। ये आंकड़ा हिन्दी भाषाई समाचार पत्र संस्थानों एवं हिन्दी पत्रकारिता से जुड़े पत्रकारों के लिए उत्साहजनक है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत आंकड़े ये दर्शाते हैं कि एक आम व्यक्ति जागरूक है और वह अपनी जानकारी अद्यतन रखना चाहता है। जानने की इसी इच्छा को पूर्ण करने के लिए वह समाचार पत्रों पर आश्रित है। सभी उत्तरदाता समाचार पत्रों को पढ़ते हैं तथा आस-पास घटने वाली घटनाओं तथा सूचनाओं को

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

विस्तृत रूप से जानने के लिए लालायित हैं। वहीं अगर भाषाई समाचार पत्रों की बात करें तो हिन्दी समाचार पत्रों को अधिकांश उत्तरदाता पढ़ते हैं तथा अंग्रेजी समाचार पत्रों को हिन्दी समाचार पत्रों की अपेक्षा कम लोग पढ़ते हैं। भाषाई आधार पर आम व्यक्ति की पठनीयता तथा रूचि को ध्यान में रखते हुए ये कहा जा सकता है कि हिन्दी पत्रकारिता के भविष्य पर की जाने वाली चिंता निरर्थक है और हिन्दी पत्रकारिता का भविष्य उज्ज्वल है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. Patri, Vasantha and Patri Neelakant, Essentials of Effective Communication, Greenspan Publication, 2005, ISBN- 81-88091-00-6.

[2]. **कश्यप, डॉ. श्याम और कुमार, मुकेश, खबरें विस्तार से, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन,** 2013, ISBN-978812671460, **पृष्ठ-240.**

[3]. **मिश्रा, अखिलेश, पत्रकारिता- मिशन से मीडिया तक, राजकमल प्रकाशन 2004/ 286pg, ISBN- 81-267-0968-5.**

[4]. **इस्सार, देवेन्द्र, मीडिया मिथ्स और मूल्य, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन** 2006/ 192pg, ISBN-81-7150-082- #.

[5]. **राय, त्रिभुवन, जनसंचार माध्यम- चुनौतियां और दायित्व, जयपुर-**University book house 1999 / 133pg, ISBN- 81-87339-11- #.

[6]. **चतुर्वेदी, जगदीश्वर, जनमाध्यम सिद्धान्तिका, दिल्ली, अनामिता पब्लिशर्स** 2002 /272pg, ISBN- 81-86565-74-4.

[7]. **जोशी, रामशरण, इक्कीसवीं सदी के संकट, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली।**

[8]. **मेहता, आलोक, पत्रकारिता की लक्ष्मण रेखा, सामयिक प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली।**

[9]. **जोशी, रामशरण, मीडिया और बाजारवाद, राधाकृष्णन प्रकाशन प्रा. लि. दिल्ली, सं 2002.**

[10]. **पचौरी, सुधीश, मीडिया की परख, नीलकंठ प्रकाशन, महरौली, दिल्ली, सं 2004.**

[11]. **तिवारी, डॉ. अर्जुन, मीडिया माफिया, माया प्रेस, इलाहबाद, सं 2004.**

[12]. **तहलका डॉट कॉम,** Defamatory journalists should be booked, www.tehelka.com.

[13]. **मीडिया खबर डॉट कॉम, जब बीइए और सुधीर चौधरी ही दागदार हैं,** www.mediakhabar.com/media-article/open-forum-issue/4147-bea-and-sudhir-chaudhri.html **फरवरी 12, 2013.**

[14]. **नवभारत टाइम्स, फैसला हुआ पर छोड़ गया कई सवाल,** www.navbharattimes.indiatimes.com/noida/it-was-decided-but-left-many-questions/articlesshow/12088548.cms **मार्च 1, 2012.**

[15]. **न्यूज ब्रॉडकास्टर्स एसोसिएशन (एनबीए), नीति संहिता और प्रसारण मानक,** www.nbanewdelhi.com.

[16]. **शोध एसाईनमैन्ट बी.भानडेर, नितिन, भारत में निजता का अधिकार और मीडिया ट्रायल, सिम्बायोसिस इन्टरनेशनल युनिवर्सिटी अगस्त 26, 2011**

[17]. **पचौरी, सुधीश, आदमी को काटती ख़बर, हताश उमा, बेहाया प्रकाश,** mediakhabar.com/media-article/special-story/1185-prakash-singh-live india.html **अक्टुबर 20, 2010.**

[18]. **ह्यूमन राइट्स समाचार, मीडिया कर्मियों के लिए मानव अधिकार तथा राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग की कार्यप्रणाली पर कार्यशाला, मई, 2012 (कान्फेन्स प्रोसिडिंग्स)**

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**